Dated 01/09/2020

B.A Part - 2 Philosophy

S/o अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

प्रयोजन एवं अभिप्राय में भेद कीजिए। नैतिक निर्णय का विषय कौन है?

Ans :- प्रयोजन वह चेतन मानसिक पद्धति है जो विशेष रीति से काम करने में संलग्न कर सकती है। मैकेन्जी के अनुसार "प्रयोजन का अर्थ या तो उससे है, जो हमें प्रवृत करता है या किसी विशेष ढंग से कर्म करने के लिए उभारता है। स्टीफेन भी मानते हैं कि "प्रयोजन एक जटिल मानसिक स्थिति है, जो व्यक्ति को कर्म की ओर प्रेरित करती है।" मनुष्य की अनेक आवश्यकताएँ रहती हैं। इसलिए उसकी इच्छाएँ भी अनेक हो जाती हैं। मनुष्य की शक्ति सीमित है। वह एक ही समय कई इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर सकता है। इन इच्छाओं में एक प्रकार का संघर्ष छिड़ जाता है। इनमें से प्राथमिकता और महत्त्व के अनुसार इच्छा विशेष को चुन लेना पड़ता है, और इसी की तृप्ति के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। "जब इच्छा का चयन हो जाता है, तब वह प्रयोजन बन जाती है।" (A desire when chosen becomes motives.)

अभिप्राय (Intention) - अभिप्राय प्रयोजन (motive) से अधिक व्यापक है। अभिप्राय में साध्य और साधन दोनों सम्मिलित हैं। अभिप्राय = प्रयोजन + साधन। अभिप्राय में इन बातों का रहना आवश्यक है :- (i) कर्म का मुख्य प्रयोजन (motive), जिसके लिए क्रिया होती है। (ii) साधन (means) का विचार, जिससे साध्य की प्राप्ति हो सकती है। (iii) कुछ प्रत्याशित परिणामों पर विचार। अतः हम संक्षेप में कह सकते हैं कि अभिप्राय (intention) सबसे व्यापक है। इसके अंतर प्रयोजन (motive) आ जाता है और प्रयोजन के अंदर इच्छा आ जाती है। अभिप्राय के अंतर्गत इच्छा और प्रयोजन दोनों आ जाते हैं।

अंतः प्रज्ञावादी और आदर्शवादी केवल प्रयोजन को ही नैतिक निर्णय का विषय मानते हैं। इसके अनुसार यदि किसी कर्म का प्रयोजन अच्छा है, तो कर्म उचित माना जाता है और यदि प्रयोजन बुरा है तो कर्म अनुचित माना जाता है। इन विचारकों के अनुसार, किस साधन से लक्ष्यप्राप्ति होती है। इसका विचार नहीं किया जाता है।